जयसेनाचार्य की टीका, यहाँ आया, अपने सबेरे आया था न ? सबेरे आया था न ? यह आत्मा जो त्रिकाल शुद्ध ध्रुवतत्त्व है... वह आगे कहेंगे। परन्तु यहाँ आया... वह तत्त्व तो निष्क्रिय है। आगे निष्क्रिय आयेगा। गाथा में भी निष्क्रिय आता है। सिद्धान्त-पंचास्तिकाय ५६ गाथा की टीका में (आता है)। 'परिणामो निष्क्रियः' ऐसा पाठ संस्कृत टीका में है। संस्कृत टीका में है-सिद्धान्त कहा है - ऐसा कहा है न, वह यह पाठ है।

वस्तुरूप से त्रिकाल आनन्द और ज्ञानस्वरूप जो नित्य ध्रुव, वह तो अक्रिय है। सबेरे जो अक्रिय आया था, वह ऊपर जैसा, ऐसा यह नहीं। पण्डितजी! वे चार द्रव्य अक्रिय, निष्क्रिय है न, तत्त्वार्थसूत्र में।

मुमुक्षु : जैनतत्त्वमीमांसा.....

पूज्य गुरुदेवश्री : नहीं, यह तो तत्त्वार्थसूत्र का दृष्टान्त है और उसमें धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाश और (काल) क्षेत्रान्तर नहीं होता, इस अपेक्षा से चार को निष्क्रिय कहा। यहाँ निष्क्रिय कहा, वह वर्तमान पर्याय की क्रिया उसमें नहीं, (इस अपेक्षा से कहा)। समझ में आया ? यहाँ निष्क्रिय अर्थात् शुद्ध पारिणामिकभाव ध्रुव, वह तो, बन्ध और मोक्ष के परिणाम जो सक्रिय हैं और उसका कारणरूप परिणाम-परिणमन जो सक्रिय है परिणमन है, इस अपेक्षा से, तो वह द्रव्यस्वभाव ध्रुवस्वभाव उस पर्याय से रहित है। आहाहा! समझ में आया ? परन्तु यह जो पर्याय होती है उपशम, क्षयोपशम, क्षायिकभाव की... उदयभाव की तो मोक्षमार्ग है नहीं, तो उसका तो निषेध कर दिया। जिस किसी पर्याय में दया, दान, व्रत आदि व्यवहारमोक्षमार्ग की पर्याय जो कहते हैं, वह तो उदयभाव है, वह तो मोक्षमार्ग में है नहीं। मात्र ध्रुव चैतन्य प्रभु शुद्ध आनन्दस्वरूप को ध्येय करके... यहाँ आयेगा विषय बनाकर - त्रिकाली वस्तु को ध्येय बनाकर, विषय बनाकर, लक्ष्य में लेकर जो परिणति खड़ी होती है, वह परिणति तीन भाव से है—आगमभाषा से उपशम,

क्षयोपशम और क्षायिक इन तीन भाव में। अध्यात्मभाषा से शुद्धआत्मा अभिमुख परिणाम। परिणाम कहो, पर्याय कहो। भगवान आत्मा शुद्ध चैतन्य वस्तु के सन्मुख की अवस्था, दशा वह मोक्ष का मार्ग और यह उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभाव यह शुद्ध उपयोग (है)। सबेरे बहुत कहा, द्रव्यसंग्रह में से। चन्दुभाई! ख्याल था तुम्हारा? परन्तु इत्यादि आया। इसलिए स्पष्टीकरण किये बिना समेट लेना। ऐ नवरंगभाई! इन लोगों को सुनना है पाठ, परन्तु यह पाठ आवे तब पाठ आवे न?

अब यहाँ आया देखो, **वह पर्याय,...** दूसरा पैराग्राफ **वह पर्याय,...** कौन सी पर्याय? जो आत्मा त्रिकाली आनन्दस्वरूप, ध्रुवस्वरूप के आश्रय से, ध्येय से, उसे विषय बनाकर, ध्येय बनाकर, जो पर्याय-सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की वीतरागीदशा उत्पन्न हुई, वह पर्याय। है न पाठ? **वह पर्याय, शुद्धपारिणामिकभावलक्षण शुद्धात्मद्रव्य...** यह विषय तो एकदम (अलग है)। समझ में आया? इस टीका में से किसी-किसी समय यह बात कहते थे, परन्तु किसी-किसी समय। यह टीका है न? यह बात तो सब पहले आ गयी है परन्तु इस श्लोक का अर्थ एकसाथ नहीं आया था। समझ में आया?

यहाँ कहते हैं कि जो वस्तु है, ध्रुव - उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत् और जो मोक्ष का मार्ग हुआ, जो तीन भाव से। राग उदयभाव से तो मोक्षमार्ग है नहीं परन्तु तीन भाव से हुआ, वह उत्पाद-व्यय की पर्याय है। उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत्, जो तत्त्वार्थसूत्र में कहा है, वह उत्पाद / नयी-नयी पर्याय उत्पन्न होती है, पुरानी व्यय होती है। उत्पाद-व्ययरूप तीन भाव हैं; पारिणामिकभाव ध्रुव है। समझ में आया? यह उत्पाद, व्यय और ध्रुव में सारा द्रव्य आ गया, त्रिकाली द्रव्य वस्तु और परिणाम जो निर्मल मोक्षमार्ग की दशा शुद्ध उपयोग स्वसंवेदनभाव, मतिश्रुतभाव जो जैनशासन कहने में आया है न? १५ वीं गाथा में (कहा है कि) श्रुतज्ञान, वह जैनशासन है। कल किसी ने प्रश्न किया था - भावश्रुतज्ञान है तो जैनशासन है न? भावश्रुत तो आत्मा है न, ऐसा किसी ने प्रश्न किया था। भावश्रुत आत्मा है न, ऐसा प्रश्न किया था, किसी ने किया था।

मुमुक्षु : कपूरचन्दजी ने।

पूज्य गुरुदेवश्री : कपूरचन्दजी ने किया था। कहाँ गये कपूरचन्दजी? पीछे बैठा

है, उसने किया था। किस अपेक्षा से ? भावश्रुत वीतरागी पर्याय, वीतरागबिम्ब चैतन्यप्रभु में एकाग्र होकर शक्ति में से जो व्यक्तता-प्रगटता शान्ति की, श्रद्धा की, ज्ञान की होती है, उसे आत्मा कहा, वह तो अभेद से आत्मा कहने में आया। बाकी 'है पर्याय, द्रव्य से कथंचित् भिन्न।' गजब बात है। सुनो, सुनो! यह शब्द आया न एक—

वह पर्याय,... कौन सी पर्याय ? जो आत्मा में शुद्धभाव की पर्याय प्रगट हुई, शुद्ध उपयोग की-जो मोक्ष का मार्ग; जो पर्याय, मोक्ष का कारण है। मोक्ष पूर्ण आनन्द-सिद्धपद, उसका वह पर्याय कारण है। वह पर्याय, शुद्धपारिणामिकभाव लक्षणवाला जो शुद्ध द्रव्य-शुद्ध आत्मद्रव्य त्रिकाली... समझ में आया ? धीरे से समझे तो समझ में आये ऐसी बात है, परन्तु यह तो मूल बात है, अलौकिक बात है। जैनदर्शन का मक्खन, मक्खन है यह। लोग मक्खन खाते हैं या नहीं ? तो यहाँ कहते हैं कि भैया! तेरी चीज़ जो शुद्धपारिणामिक स्वभावभाव ऐसा शुद्धात्मद्रव्य, शुद्धात्मवस्तु, उससे यह पर्याय-मोक्ष के मार्ग की पर्याय... सबेरे ६५ बोल जहाँ से कहे थे वह, **शुद्धात्मद्रव्य से कथंचित् भिन्न है।** समझ में आया ? एक अपेक्षा उसमें यह है कि वर्तमान परिणाम जो उत्पन्न होता है, वह वहाँ सत्रूप अस्तित्व है, तो द्रव्य के साथ व्यवहार से अभिन्न है - ऐसा यहाँ सिद्ध करना है। समझ में आया ? निश्चय से भिन्न है। लो, आया यह। समझ में आया ?

वह पर्याय स्वयं व्यवहार है। मोक्षमार्ग की जो पर्याय है, वह व्यवहार है तो वह व्यवहार एक अपेक्षा से द्रव्य के साथ अभिन्न है और निश्चय की अपेक्षा से भिन्न है। यह आया, भाई अन्दर से। कहो, समझ में आया ? वस्तु, वस्तु है। वैसे तो परिणाममात्र व्यवहार है—ऐसा सिद्धान्त में आता है 'परिणाममात्र व्यवहार और ध्रुव निश्चय।' समझ में आया ? **व्यवहारोऽभूयत्थो** (समयसार, गाथा ११) ऐसा आया है न! व्यवहार अर्थात् पर्याय अभूतार्थ है, वहाँ तो ऐसा कहा है। पर्याय अर्थात् मोक्ष के मार्ग की पर्याय, वह भी असत्यार्थ है; सत्यार्थ तो प्रभु ध्रुव त्रिकाली द्रव्य, वह सत्यार्थ है। समझ में आया ? सत् आत्मा वह त्रिकाली द्रव्य, वह सत्य है और पर्याय को असत् कहा, वह गौण करके कहा था। समझ में आया ? आश्रय करनेयोग्य नहीं है, इस कारण वहाँ उसे असत्यार्थ कहा। यहाँ जरा लेते हैं कि वह पर्याय है, वर्तमान में तो उस द्रव्य के साथ अभेद है, क्योंकि भावना विनाशीक कहते हैं न, भाई! भावना को विनाशीक कहेंगे। विनाश की अपेक्षा से, कायम नहीं रहती

इस अपेक्षा से भिन्न है। एक समय की पर्याय वहाँ द्रव्य के साथ एकाकार है, इस अपेक्षा से अभिन्न कहने में आया है। आहाहा!

सूक्ष्म विषय है भाई! आचार्य ने पंचम काल के जीवों के लिये यह कहा है। ऐसा कोई कहे-ओहोहो! यह तो चौथे काल की बातें हैं। अरे! चौथा नहीं, आत्मा के लिये है तो आत्मा जहाँ है, उसके लिये कहा है। नन्दकिशोरजी! आहाहा!

यहाँ तो आठ वर्ष की बालिका हो या करोड़पूर्व की आयुष्यवाला आदमी हो, आत्मा तो आत्मा है; वह आत्मा स्त्री नहीं और पुरुष भी नहीं; वह आत्मा राग भी नहीं और कर्म भी नहीं, परन्तु उस त्रिकाली आत्मा में जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय उत्पन्न हुई, वह भी कथंचित् भिन्न और कथंचित् अभिन्न है। समझ में आया?

मुमुक्षु : अपेक्षा से कहा है।

पूज्य गुरुदेवश्री : पहले तो भिन्न ही कह दिया है, बाद में भी भिन्न कहेंगे। समझ में आया? परन्तु यहाँ जरा पर्याय एक समय रहती है, एक समय, शुद्ध भगवान आत्मा का-आनन्द का अनुभव, एक समयमात्र अनुभव रहता है। समझ में आया? लो! यह फिर आया, भाई! वह पर्याय-बीसवाँ बोल, अलिंगग्रहण (प्रवचनसार गाथा १७२)। लो, कहाँ का कहाँ आया, कौन जाने, यह कोई विचार नहीं किया था।

उस बीसवें बोल में आता है न, कि जो आत्मा प्रत्यभिज्ञान, प्रत्यभिज्ञान अर्थात् कायम रहनेवाला ऐसा आत्मा, वह पर्याय, वह द्रव्य पर्याय को स्पर्शता नहीं, ऐसी पर्याय को आत्मा कहते हैं, वहाँ ऐसा कहा। आत्मा त्रिकाली ज्ञायक चैतन्य ध्रुव जो प्रत्यभिज्ञान का विषय सामान्य द्रव्य जो वस्तु है वह पर्याय को स्पर्श नहीं करती अर्थात् वह द्रव्य जो है, वह पर्याय को आलिंगन नहीं करता। समझ में आया? परन्तु उस पर्याय को ही वहाँ आत्मा कहा है। समझ में आया?

इसी प्रकार एक समय की पर्याय अभिन्न है, वह आत्मा है-ऐसा कहा और वस्तुरूप से कायम नहीं रहती, इस कारण उसको भिन्न कह दिया। समझ में आया? एक समय के अतिरिक्त दूसरे समय वह पर्याय नहीं रहती। गजब बातें भाई! आहाहा! समझ में आया? देखो, यह वीतराग का मार्ग! सर्वज्ञ परमेश्वर ने ऐसा मार्ग देखा है, ऐसा अनुभव

करके मोक्ष लिया है। वे कहते हैं ऐसा भगवान जितने यह मोक्षमार्ग की तीन भावरूप पर्यायें कही, वे सब परमपारिणामिकस्वभाव ऐसा द्रव्यस्वभाव / वस्तुस्वभाव से कथंचित् भिन्न हैं। प्रमाण के विषय से अभिन्न और निश्चय के विषय से भिन्न – ऐसा यहाँ लागू नहीं होता। ऐ चन्दुभाई! क्यों? यहाँ तो शुद्धपारिणामिकलक्षण शुद्ध आत्मद्रव्य से कथंचित् भिन्न – ऐसा लिया है। उस द्रव्य से कथंचित् भिन्न और उस द्रव्य से कथंचित् अभिन्न, भाई! समझ में आया? प्रमाण की अपेक्षा से अभिन्न और निश्चय की अपेक्षा से भिन्न, वह यहाँ लागू नहीं होता। लागू नहीं होता (को) क्या कहते हैं? घटित नहीं होता। तुम्हारी भाषा है। ऐसा यहाँ घटित नहीं होता। क्योंकि यहाँ वह पर्याय, शुद्धपारिणामिकभाव लक्षणवाला ऐसा जो शुद्धद्रव्य वस्तु ध्रुव, जो सम्यग्दर्शन का ध्येय, जो सम्यग्दर्शन का विषय, जो सम्यग्दर्शन को लक्ष्य करनेयोग्य चीज़ है, वह शुद्धात्मा भगवान आत्मा जो नित्य ध्रुव है, उससे यह जो मोक्ष के मार्ग की पर्याय, किसी अपेक्षा से भिन्न है, कायम नहीं रहती (इस अपेक्षा से भिन्न है)। आचार्य स्वयं कहेंगे, भाई! भावना विनाशीक है, इसलिए वह भावना कायम नहीं रहती; इसलिए कथंचित् भिन्न है। समझ में आया? आहाहा!

कथंचित् भिन्न है। किसलिए?... देखो! किसलिए भिन्न है कि **भावनारूप होने से।** वह त्रिकाली, भावरूप होने से यह चीज़ नहीं है। वह भावना... देखो! यहाँ भावना का अर्थ विकल्प और चिन्तवन नहीं है। यह उपशम, क्षयोपशम, क्षायिकभाव को यहाँ भावना कहने में आया है। आहाहा! समझ में आया? वस्तु जो त्रिकाल है, उस ओर की एकाग्रता। एक + अग्र – आत्मा अग्ररूप से लक्ष्य में लेकर जो पर्याय उत्पन्न हुई, उसे भावना कहते हैं। यह फिर बारह भावना और उस भावना की बात नहीं है तथा यह भावना अर्थात् विकल्प और चिन्तवन है, वह भावना नहीं। यहाँ तो त्रिकाली ज्ञायकभाव में एकाग्रता एक समय की, उसको यहाँ भावना कहते हैं। समझ में आया? एक समय की पर्याय दो समय नहीं रहती। मूलचन्दभाई! समझ में आया? यह बहुत सूक्ष्म आया है तो यह निकला। कहीं माना होगा लोगों ने, ऐ सेठ!

कहते हैं, वह भावनारूप होने से (भिन्न है)। क्यों भिन्न है? कि भावनारूप होने से भिन्न है। वह त्रिकालीभावरूप नहीं, इसलिए (भिन्न है)। समझ में आया? **शुद्धपारिणामिक (भाव) तो भावनारूप नहीं है।** देखो! जो त्रिकाली ध्रुवस्वभाव है, वह तो भावनारूप

नहीं है। यह पर्यायरूप नहीं होता एक समय की भावना है। वह त्रिकाली भाव, भावना नहीं है। समझ में आया? अरे! भारी-सूक्ष्म, भाई! **शुद्धपारिणामिक (भाव) तो भावनारूप नहीं है।** भावनारूप नहीं है। यहाँ तो भावना है मोक्षमार्ग, वीतरागी पर्याय है। वीतरागी त्रिकाली बिम्ब नहीं। त्रिकाल वीतरागी बिम्ब जो प्रभु आत्मद्रव्य, वह नहीं है। यह तो भावनारूप नयी पर्याय उत्पन्न होती है। ऊपर शक्ति में से व्यक्ति कहा था न? भव्यत्वशक्ति की व्यक्ति। समझ में आया?

तो कहते हैं कि **यदि (वह पर्याय) एकान्तरूप से शुद्ध-पारिणामिक से अभिन्न हो,...** देखो! एकान्तरूप से अभिन्न हो। कथंचित् भिन्न, ऐसा कहा कथंचित् अभिन्न ऐसा कहा, ऐसा आया न पहले? कथंचित् भिन्न, इसका अर्थ कथंचित् अभिन्न। किसके साथ? त्रिकाली द्रव्य के साथ। भगवान आत्मा, अपना निजानन्दस्वरूप की दृष्टि करने से जो मोक्षमार्ग की पर्याय प्रगट हुई, वह आनन्द का अनुभव, शुद्धोपयोग, वह पर्याय त्रिकाली द्रव्य से कथंचित् भिन्न है। क्यों? कि वह पर्याय भावनारूप है। वह वस्तु त्रिकाली भावनारूप नहीं है। समझ में आया? ऐसा, **यदि (वह पर्याय) एकान्तरूप से शुद्ध-पारिणामिक से अभिन्न हो,...** एकान्त से-एकदम वह पर्याय और द्रव्य अभेद हो तो वह पर्याय कायम रहनी चाहिए अथवा पर्याय का नाश होने से द्रव्य का नाश हो जायेगा। गजब बात! समझ में आया?

वह पर्याय... मोक्षमार्ग की पर्याय, क्षायिकभाव की पर्याय। देखो! उसमें वह 'भी' आया न? केवलज्ञान की पर्याय, क्षायिकभाव की पर्याय, क्षायिक समकित की पर्याय। यहाँ मोक्षमार्ग अर्थात् केवलज्ञान नहीं लेना। क्षायिक समकित, क्षायिक चारित्ररूपी पर्याय, वह भावनारूप है। त्रिकाली भगवान आत्मा में ध्येय करके ध्यान में जो पर्याय उत्पन्न हुई, वह भावना है; त्रिकाली भाव नहीं। यदि त्रिकाली भाव से-शुद्धपारिणामिकभाव से वह पर्याय एक ही हो, एकमेक हो, अत्यन्त अभिन्न हो, एकान्त से अभिन्न हो तो **मोक्ष का प्रसंग आने पर...** जब केवलज्ञान और मुक्ति होगी तो यह भावनारूपी पर्याय नहीं रहेगी। समझ में आया? मोक्षमार्ग की पर्याय का व्यय और मोक्ष की पर्याय का उत्पाद, जो भावना और त्रिकालीभाव अत्यन्त अभिन्न हो तो मोक्ष होने से पर्याय का नाश होगा और पर्याय तथा

द्रव्य सर्वथा अभिन्न हो तो पर्याय का नाश होने से द्रव्य का भी नाश हो जायेगा। तो द्रव्य का तो नाश कभी होता नहीं। समझ में आया?

मोक्ष का प्रसंग आने पर... प्रसंग आने पर उसे मोक्ष होगा ही - ऐसा कहते हैं। जिसमें ऐसी भावना... भगवान आत्माा वस्तु है, उसे ध्येय बनाकर जो पर्याय धर्म की, शान्ति की, सम्यग्दर्शन-ज्ञान, शान्ति की चारित्र की जो भावना उत्पन्न हुई है, वह जब पूर्ण मोक्ष-केवलज्ञान होगा, तब वह भावना नहीं रहेगी तो वह पर्याय नहीं रहेगी, वह पर्याय नहीं रहेगी। यदि वह पर्याय और द्रव्य सर्वथा अभिन्न हो तो पर्याय का नाश होने से द्रव्य का भी नाश हो जायेगा। अभिन्न हो तो यह नाश हो तो उसका भी नाश हो जायेगा। **परन्तु ऐसा तो होता नहीं...** न्याय समझ में आता है? अरे! गजब बात, भाई!

मुमुक्षु : पर्याय अभिन्न हो तो पर्याय का नाश होने पर द्रव्य का नाश हो जाये?

पूज्य गुरुदेवश्री : द्रव्य का नाश हो जाये। पण्डितजी! है उसमें?

तो कहते हैं यदि शुद्ध एकान्तरूप से भगवान के साथ-द्रव्य के साथ वह मोक्ष के मार्ग की पर्याय-भावना, उस त्रिकाली भाव के साथ वह भावना सर्वथा एक हो तो मोक्ष का प्रसंग आने पर वह पर्याय नहीं रहेगी। समझ में आया? मोक्ष की पर्याय जब होती है, तब यह भावनारूप मोक्ष के मार्ग की पर्याय नहीं रहती है, नाश होती है।

मोक्षकारणभूत (पर्याय)... देखो! मोक्ष होने पर मोक्ष के कारणरूप दशा का तो व्यय होता है, नाश होता है। **शुद्धपारिणामिकभाव भी विनाश को प्राप्त हो,...** लो, आहाहा! यह क्रीड़ा-परिणाम और परिणामी दो के बीच की बातें करते हैं। समझ में आया? राग को छूता ही नहीं, निमित्त को छूता ही नहीं। आहाहा! समझ में आया? अपनी वीतरागी धर्म पर्याय जो द्रव्य का ध्येय बनाकर... आगे कहेंगे। विषय बनाकर, विषय अर्थात् ध्येय, यह द्रव्य वस्तु। समझ में आया? अपने आया था वहाँ, नहीं अष्टपाहुड़ में? मतिरूपी धनुष, श्रुतरूपी डोरी, सम्यग्दर्शनज्ञानरूपी बाण लगाया ध्रुव पर, लक्ष्य पर। समझ में आया? भावमतिज्ञानरूपी धनुष, भावश्रुतज्ञानरूपी डोरी और सम्यग्दर्शनज्ञान-चारित्ररूपी बाण तो दर्शन-ज्ञान-चारित्र, मति-श्रुत आदि सब उसमें आ गया। बाण मारा ध्रुव के ऊपर, त्रिकाली ध्रुव वह लक्ष्य करने योग्य है। आहाहा! समझ में आया? यह धर्म

करनेवाले को लक्ष्य और ध्येय ध्रुव ऊपर ध्यान लगाने का है। इसके अतिरिक्त धर्म कभी नहीं होता। आहाहा! समझ में आया?

कहते हैं जो यह मोक्षमार्ग की पर्याय-भावना, मोक्ष का प्रसंग होने पर.. यहाँ तो निश्चय से उसको मोक्ष होगा ही ऐसा कहा है। मोक्ष (मार्ग) की पर्याय हुई है तो मोक्ष तो होगा ही। समझ में आया? तो जब मोक्ष होगा-सिद्धपर्याय, केवलज्ञान की पर्याय (होगी) तो इस पर्याय का (भावनारूप पर्याय का) तो विनाश होता है। मोक्षमार्ग की जो पर्याय है, उसका तो अभाव होता है, नाश होता है। यदि त्रिकाली द्रव्य के साथ इस पर्याय को अत्यन्त एक कहो, एक कहो, अभिन्न कहो तो पर्याय का नाश होने से उसके साथ जो अभिन्न द्रव्य था, उसका भी नाश होगा। समझ में आया? गजब बात, भाई! भाषा तो सादी आती है, उसमें कोई भाव भले ऊँचे हों, भाव तो.. आहाहा! भाषा आती है, हों! ऐसा। आहाहा!

कहते हैं मोक्ष हो जाने पर इस भावनारूप **मोक्षकारणभूत (पर्याय)...** मोक्षकारणभूत पर्याय। कोई कहते हैं न सिद्ध को आठ गुण हैं। वे तो गुण नहीं, वे गुण नहीं; वह तो पर्याय है। सिद्ध को जो अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन वह गुण नहीं, वह तो पर्याय है, अवस्था है। जब ऐसी अवस्था प्रगट होती है, तब मोक्षमार्ग की पर्याय का नाश होता है, तो मोक्षमार्ग की पर्याय-अवस्था और वस्तु त्रिकाली, यह सर्वथा एक हो, सर्वथा एक हो तो पर्याय का नाश होने से वस्तु भी नाश हो जायेगी। इसलिए सर्वथा एकान्त से अभिन्न है नहीं। कथंचित् भिन्न है। कथंचित् अभिन्न है - ऐसा इसका अर्थ हुआ न? समझ में आया? आहाहा!

परन्तु ऐसा तो होता नहीं है... भगवान आत्मा ध्रुव, ध्रुव सत् का सत्व, प्रभु आत्मा सत्, उसका भाव परमस्वभावभाव सत्व, ऐसा का ऐसा अनादि से रहता है। सिद्ध में भी ऐसा है, सिद्ध की पर्याय प्रगट हुई तो सत्व में कोई कमी आ गयी - ऐसा है नहीं और यहाँ नरक की योनि में-नरक में रहा, (निगोद में) अक्षर के अनन्तवें भाग ज्ञान के विकास का अंश बहुत थोड़ा रहा तो भी ध्रुव तो ध्रुव ही है, उसमें कोई कमी नहीं होती और सिद्ध हो तो कोई वृद्धि नहीं होती। समझ में आया? गजब बात भाई!

यह ध्रुव का समुद्र, ध्रुव का सागर तो ऐसा का ऐसा रहता है। यह बाढ़... क्या कहते हैं तुम्हारे? हमारे (यहाँ) भरती-ओट कहते हैं। बाढ़ आती है ओट पानी आता है। फिर

ऐसी पर्याय ध्रुव में नहीं है। बाढ़ आओ केवलज्ञान का कि हट जाओ अनन्तवें भाग-अक्षर के अनन्तवें भाग तो वस्तु में कुछ बढ़-घट नहीं होती। समझ में आया? ऐसा जो द्रव्य है, वह यदि अभिन्न एकपना पर्याय और द्रव्य को एकपना हो तो मोक्ष का प्रसङ्ग होने पर पर्याय का नाश होता है तो वस्तु का भी नाश हो जाये - एक, एक यदि मानो तो। **परन्तु ऐसा तो होता नहीं है...** आहाहा! कहाँ लिया? शरीर नाशवान, राग नाशवान, यह पर्याय नाशवान, मोक्ष का मार्ग नाशवान। ऐ! आहाहा! समझ में आया?

एक गाय पड़ी थी न आज। जंगल गये, (तब देखी थी) चौबीस घण्टे से पड़ी थी। दु:खी, कल गये थे सबेरे नौ बजे, अभी गये साढ़े नौ बजे तो जीवित थी, सांस चलता था। समाप्त होने की तैयारी थी, चौबीस घण्टे से ऐसी की ऐसी पड़ी थी।

क्या रोग का दु:ख, दु:ख किसको है? एकत्व का दु:ख है, शरीर के रोग का दु:ख नहीं। राग की एकता के साथ जो मिथ्यात्वभाव उत्पन्न होता है, उस मिथ्यात्व में आकुलता, वह दु:ख है। वह दु:ख की पर्याय, द्रव्य में नहीं है। आहा! और धर्म की पर्याय प्रगट हुई, वह भी द्रव्य में नहीं है। गजब बात, भाई! समझ में आया?

परन्तु ऐसा तो होता नहीं है (क्योंकि शुद्धपारिणामिकभाव तो अविनाशी है)। भगवान आत्मा का द्रव्यस्वरूप तो त्रिकाल अविनाशी है, त्रिकाल अविनाशी है। समझ में आया?

इसलिए ऐसा सिद्ध हुआ.... लो! इस कारण से ऐसा सिद्ध हुआ कि... तुम्हारे पास नहीं, है न पन्ना? तुम्हें पन्ना दिया नहीं, वहाँ है। समझ में आया? ओहो! अमृत का सागर उछला है। आहाहा! ऐसा कहते हैं देखो! कितनी बात में ध्यान रखना चाहिए? कहते हैं कि **इसलिए ऐसा सिद्ध हुआ - शुद्धपारिणामिकभावविषयक (शुद्धपारिणामिकभाव का अवलम्बन लेनेवाली)...** भाषा देखो! फिर भले अवलम्बन लिया, उसमें विषय करनेवाली भावना है, वह तो शुद्धपारिणामिक को विषय करनेवाली है, ध्येय करनेवाली है। बस! फिर अवलम्बन भी उसे कहा जाता है। वास्तव में तो पर्याय, द्रव्य का आश्रय करती है - ऐसा नहीं है। निश्चय से तो परिणाम परिणाम के अवलम्बन से है, द्रव्य के अवलम्बन से नहीं। अरे! गजब बात भाई! सत् है न, वह सत् है न? पर्याय सत् है न?

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय सत् है न ? अरे ! मोक्ष की पर्याय भी सत् है न ? है, उससे द्रव्य का अवलम्बन कहना, वह भी अपेक्षित ज्ञान करना है। उसमें-निरपेक्ष में तो वह पर्याय, पर्याय से है; द्रव्य से भी है नहीं।

वास्तव में तो पर्याय, द्रव्य का अवलम्बन लेती नहीं है-ऐसा कहते हैं। यह तो कहा न ? आश्रय कहा-वहाँ कहा, वहाँ आश्रय कहा, यहाँ विषय कहा, उसका अर्थ यह कि पर्याय इस ओर झुकती है न, तो आश्रय लिया, आलम्बन लिया ऐसा कहने में आता है। कौन सी पर्याय ? यह प्रश्न बाद में, देखो ! यह वर्तमान पर्याय है, यह पर्याय तो अन्दर में झुकती नहीं। समझ में आया ? क्योंकि इस पर्याय का लक्ष्य तो पर के ऊपर है तो पर्याय झुकती है द्रव्य में, इस अपेक्षा से पर्याय को आश्रय-अवलम्बन द्रव्य का है - ऐसा कहने में आया है। बहुत सूक्ष्म !

भूदत्थमस्सिदो खलु ग्यारहवीं गाथा (में) ऐसा शब्द है न ? भूतार्थ के आश्रय से। वह तो उत्पन्न होता है अव्यक्तरूप से, इस अपेक्षा से कहा परन्तु है अपने से उत्पन्न हुई। आलम्बन-फालम्बन किसी का है नहीं। समझ में आया ? ध्रुव त्रिकाली सत् है, वैसे एक समय की पर्याय भी सत् है। उस सत् का विषय क्या ? ध्रुव है - ऐसा कहते हैं। आहा ! वह मेंढ़क भी समकित प्राप्त करता है तो ध्रुव के लक्ष्य से प्राप्त करता है। लाख बात की बात अनन्त करे परन्तु ध्रुव भगवान आत्मा का अन्दर में पर्याय को भेंट करने से... पर्याय भेंट क्यों ? पर्याय से काम लेना है न ? इसलिए बात तो पर्याय से आती है परन्तु यह पर्याय उसका आश्रय करती है, यह भी व्यवहार से आया। वह प्रगट होती है उसके आश्रय से-ऐसा कहने में आता है।

शुद्धपारिणामिकभावविषयक (शुद्धपारिणामिकभाव का अवलम्बन लेनेवाली).... अर्थात् विषय करनेवाली। **जो भावना,...** क्या कहा ? सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की जो धर्म पर्याय है, उसका विषय ध्रुव है, वह भावना ध्रुव को विषय करती है। समझ में आया ? गजब बात भाई ! ऐई, शोभालालजी ! यह सुना ही नहीं अभी तक कुछ, ऐसे का ऐसे हो गया सेठ, वहाँ फिर धर्म में भी बड़ा कहलाये।

श्रोता : अब तो सुनने को मिल गयी।

पूज्य गुरुदेवश्री : बात तो सच्ची है, योग्यता से मिलती है। निरालम्बी प्रभु को पर्याय का भी आलम्बन नहीं है और पर्याय को द्रव्य का आलम्बन कहना... अंश है न और लक्ष्य जाता है, इस अपेक्षा से आलम्बन कहने में आया है। विषय करना है न? पाठ है न? शुद्धपारिणामिकभाव को विषय बनानेवाली, शुद्धपारिणामिक त्रिकाल भाव को ध्येय बनानेवाली। समझ में आया? आहाहा! मार्ग तो देखो! वीतराग सर्वज्ञ ऐसी बात (करते हैं)। वीतराग सर्वज्ञ के अतिरिक्त अथवा दिगम्बर धर्म के अतिरिक्त यह बात अन्यत्र कहीं नहीं होती। समझ में आया? वस्तु का स्वरूप ऐसा है।

पर्याय को पर्याय आलम्बन नहीं है। पर्याय का पर्याय विषय नहीं है। क्या? समझ में आया? सम्यग्दर्शन की पर्याय, मोक्षमार्ग की पर्याय, यह पर्याय, पर्याय है। उसका विषय पर्याय नहीं तो उस पर्याय का विषय राग और निमित्त तो कहीं रह गये? आहाहा! समझ में आया?

भगवान आत्मा जो परम स्वभावभाव / द्रव्यभाव, उसको विषय बनानेवाली वर्तमान पर्याय-मोक्षमार्ग की, धर्म की पर्याय, त्रिकाली धर्मी को विषय करती है, उसे ध्येय में लेती है। वह धर्म की पर्याय अपना भी आश्रय करके पर्याय का आलम्बन लेती है - ऐसा नहीं है। आहाहा! समझ में आया? यह शास्त्र से ज्ञान हुआ न? उस पर्याय को भी धर्म की पर्याय का ध्येय और आलम्बन नहीं है परन्तु वह पर्याय प्रगट हुई - वह धर्म की पर्याय प्रगट हुई वह पर्याय, पर्याय का विषय नहीं है। मोक्षमार्ग की निर्मल पर्याय, पर्याय का विषय नहीं है। समझ में आया? मार्ग भाई! गजब बात भाई!

पर्याय, जो मोक्ष कहो, मोक्षमार्ग कहो, सब पर्याय है-अवस्था है - सक्रिय परिणमन है। समझ में आया? धर्म, वह पर्याय है और धर्म का पूर्ण फल केवलज्ञान, वह भी एक पर्याय है, वह पर्याय नाशवान है। आहाहा! इसलिए वह पर्याय, द्रव्य से कथंचित् भिन्न है। भिन्न न हो तो पर्याय के नाश से वस्तु का भी नाश हो जाये... ऐसा शुद्धपारिणामिक को जिसने विषय बनाया, ऐसी जो भावना-सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र... समझ में आया? सम्यग्दर्शन-ज्ञान और चारित्र ने विषय बनाया ध्रुव को, ऐसी भावना और... क्या कहते हैं? अब ऊपर ली थी वह बात ली, 'उसरूप जो उपशमादि तीन भाव...' देखो, यह भावना है।

यह उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक तीन भावरूप है। समझ में आया? देखो, यहाँ व्यवहार का निषेध करने को यह लिया है, भाई! व्यवहाररत्नत्रय है तो निश्चयरत्नत्रय धर्म प्रगट होता है-ऐसा नहीं है। निश्चयरत्नत्रय प्रगट होने में ध्येय ध्रुव है। देखो! यह लोग चिल्लाते हैं - एकान्त कहते हैं। अरे, सुन तो सही! यह क्या कहते हैं यहाँ? ऐ..ई.. लालचन्दजी! कहते हैं न ऐसा? व्यवहार से कुछ लाभ नहीं आत्मा को। व्यवहार से कुछ लाभ नहीं? लाभ है बन्ध का। समझ में आया?

कहते हैं वह धर्म पर्याय.... आहाहा! वह कैसी धर्म पर्याय? वीतरागी शोभित पर्याय, वह भावनारूप होने से तीन भावरूप है, क्योंकि तीन भाव पर्यायरूप है। उदय भी पर्याय, परन्तु उदय का तो यहाँ निषेध करेंगे, देखो! **समस्त रागादि से रहित होने के कारण...** यह उदय का निषेध कर दिया। चार-पहले पर्याय को बताया था कि पर्याय चार भावरूप है और द्रव्य पारिणामिकभावरूप है। पाँच भाव समाहित कर दिये थे। वस्तु जो त्रिकाली है, वह पारिणामिकभाव त्रिकालरूप ध्रुवभाव है—पारिणामिकभाव है और पर्याय, वह चार भाव पर्याय है, तो उसमें जो तीन भाव की पर्याय है, वह मोक्षमार्ग की पर्याय है। वह उदय भाव की पर्याय है परन्तु वह उदय - समस्त रागादि से रहित होने के कारण, सम्यग्दर्शन की पर्याय, मोक्षमार्ग की पर्याय वह तो वीतरागी पर्याय है। वह समस्त रागादि से रहित, पंच महाव्रत के विकल्प और नवतत्त्व की श्रद्धा के विकल्प -सबसे रहित वह मोक्ष का मार्ग है। आहाहा!

मुमुक्षु : समस्त रागादि से रहित तो बारहवें में...

पूज्य गुरुदेवश्री : अरे! यहाँ चौथे गुणस्थान की बात है। मोक्ष का मार्ग रागादि से रहित ही है। समस्त रागादि से रहित अर्थात्? परन्तु वह रागादि से रहित ही है। सम्यग्दृष्टि व्यवहार से मुक्त है। व्यवहार का आश्रय / विकल्प, वह राग है। दया, दान, व्रतादि का विकल्प है, उससे दृष्टिवन्त ध्येय बनाना ध्रुव को तो राग से तो वह मुक्त ही है, वह बताते हैं, देखो! उपशमभाव में कहते हैं-ये तीन भाव कहे हैं या नहीं? उपशम आदि तीन भाव कहे हैं या नहीं? या उसमें क्षायिकभाव, क्षयोपशम (भाव) दो ही लिये हैं? उपशमभाव, वह भी पर्याय है, वह उदय अर्थात् समस्त राग से रहित है। समझ में आया? वे तीन भाव

ऊपर कहे थे, तत्पश्चात् वह भावना जिसे कहा, जिसके सबेरे बहुत बोल लिये थे, वह सब पर्याय है। हमारे पण्डितजी कहते हैं – पर्याय का इतना अधिक माहात्म्य ? माहात्म्य तो द्रव्य का है, परन्तु पर्याय का इतना माहात्म्य तो द्रव्य का कितना माहात्म्य ? ऐसा लेना है। ऐ..ई.. शशीभाई !

सबेरे पर्याय के इतने गीत गाये, इतने गीत ? भाई ! वह तो पुत्र है, प्रजा है, द्रव्य की पर्याय है, प्रजा है। समझ में आया ? इसकी पर्याय। प्रमाण की अपेक्षा से पर्याय इसकी (द्रव्य की) कहलाती है। समझ में आया ? और एक समय की पर्याय अभिन्न है, इस अपेक्षा से आत्मा की पर्याय कहने में आती है। समझ में आया ? सबेरे बहुत आया था। शुद्धात्मद्रव्य कहा, लो ! इसको (पर्याय को) शुद्धात्मद्रव्य कहते हैं। यहाँ जो शुद्धात्मद्रव्य कहते हैं, ऐसा शुद्धात्मद्रव्य कह दिया। वह तो अभेद की अपेक्षा से–पर्याय इस ओर झुक गयी है, राग से हटकर स्वभाव की ओर झुक गयी है तो शुद्ध द्रव्य के साथ अभेद करके शुद्ध द्रव्य ही है (–ऐसा) उसे कह दिया है। समझ में आया ? कहते हैं कि उपशम आदि तीन भाव, उपशम आदि में अकेला उपशमभाव नहीं लेना और अकेला क्षायिकभाव लेना ? **समस्त रागादि से रहित...** पण्डितजी ! तीनों भाव, राग से रहित कहे हैं, क्योंकि उदयभाव पर्याय है तो उसका तो यहाँ निषेध करके स्वभाव प्रगट हुआ है – ऐसा बताते हैं। निषेध का अर्थ (यह है कि) उससे लक्ष्य छोड़ दिया, वह निषेध है। द्रव्य / वस्तु को ध्येय बनाया तो पर्याय प्रगट हुई, वह पर्याय यहाँ समस्त राग से रहित, वह पर्याय है। समझ में आया ?

देखो न ! यह पृष्ठ तो सबके हाथ में दिये हैं। पृष्ठ में क्या लिखा है देखो ? क्या नहीं लिखा है – उपशमआदि, वह भावना ? जो निर्मल पर्याय है, वह भावना विनाशीक है। शाश्वत् द्रव्य के साथ रहती नहीं, इस कारण से भावना को तीन भावरूप कहा। उपशमभाव, क्षयोपशमभाव, क्षायिकभाव – तीन भाव कहा। वे तीन भाव समस्त रागादि से रहित हैं। अब पाठ है या नहीं उसमें ? स्पष्ट है ? विकल्प–फिकल्प दया, दान, व्रत, भक्ति के परिणाम, इस राग से उपशमभाव, क्षायोपशमिकभाव, क्षायिकभावरहित है। है न ? पृष्ठ दिया है न तुम्हारे हाथ में ? रामजीभाई ने उस दिन पन्द्रह सौ पृष्ठ छपाये हैं। कोई कहता है पाँच सौ छपाओ, ये कहते हैं पन्द्रह सौ छपाओ। भाई ! पृष्ठ वह पृष्ठ। पृष्ठ फिरे, और सोना झरे ऐसा नहीं कहते तुम्हारे ? उगाही भरी हो न अन्दर पृष्ठ में ? उगाही समझते हो ? लेन–

देन। ऐसा खुले तो ओहो! अमुक से इतना लेना है। इस प्रकार पन्ना फिरे और सोना झरे, वह पन्ना फिरे और सोना झरे, उसमें धूल कुछ नहीं मिलता।

यह ज्ञान की पर्याय फिरे और अन्दर आनन्द का झरना झरे - ऐसा कहते हैं। आहाहा! भाई! चिद्विलास में आता है न, कि जैसे-जैसे आचार्य गुण के भेद करके समझाते हैं, वैसे-वैसे शिष्य को अधिक आनन्द आता है। यह चिद्विलास में है।

मुमुक्षु : कारणकार्य है।

पूज्य गुरुदेवश्री : हाँ, कारणकार्य में डाला है। पृष्ठ सब कहीं याद रहते हैं? चिद्विलास में है। आचार्य जैसे-जैसे गुण के भेद करते-करते-करते बताते हैं, वैसे-वैसे शिष्य को आनन्द आता है - ऐसा कहते हैं। लो, भेद बताते हैं, और आनन्द आता है, क्योंकि जिसकी दृष्टि द्रव्य पर पड़ी है, उसे तो विकल्प के काल में भी शुद्धि ही होती है। समझ में आया? चाहे तो अशुभ विकल्प का काल हो, तो भी स्वभावसन्मुख के झुकाव की वह दशा है तो वहाँ निर्जरा ही होती है, अशुद्धता टलती है और शुभभाव हो तो अधिक स्वभावसन्मुख झुकाव है, तो अधिक शुद्धि बढ़ती है। आहाहा! समझ में आया?

क्योंकि यहाँ तो दृष्टिवन्त शिष्य लिया है न? भाई! दृष्टिवन्त शिष्य, जहाँ द्रव्य पर दृष्टि है, उस शिष्य को जैसे-जैसे यह सत्य सुनाते हैं तो वह श्रद्धा-ज्ञान उस समय शून्यरूप नहीं रहा; भले विकल्प आया, सुनने में विकल्प आया और विकल्प से सुनते हैं, परन्तु उस समय श्रद्धा-ज्ञान, श्रद्धा-ज्ञान का कार्य करते हैं या श्रद्धा-ज्ञान का कार्य नहीं करते हैं? क्या कहा यह? समझ में आया?

धर्मी जीव अपने द्रव्यस्वभाव को ध्येय बनाकर जो धर्म-श्रद्धा-ज्ञान सम्यग्दर्शन-ज्ञान, तीन भावरूप था वह प्रगट हुआ। अब उसका विकल्प में लक्ष्य गया। समझ में आया? तो वह तो चारित्र के दोष की अपेक्षा से पर में लक्ष्य गया परन्तु उस समय श्रद्धा-ज्ञान कोई कार्य करते हैं या नहीं? या श्रद्धा-ज्ञान कार्य किये बिना शुष्क पड़े हैं? समझ में आया? सबेरे दो मिनिट आ गया था, ख्याल नहीं था परन्तु देखा तो ओहो! यह तो समय हो गया।

क्या कहा उसमें? कि यहाँ कहा कि उपशमभाव, क्षयोपशमभाव और क्षायिकभाव, यह मोक्षमार्ग की पर्याय का भाव कहा, वह भाव **समस्त रागादि से रहित होने के कारण...**

क्योंकि धर्मी को ध्रुव पर दृष्टि होने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान और कितने ही शुद्ध स्थिरता हुई है। अब वह राग से रहित है तो ऐसे श्रद्धा-ज्ञान में ध्रुव का जो कार्य है, वह श्रद्धा-ज्ञान में होता है। स्वरूप की स्थिरता का भी कार्य होता है। समझ में आया? चारित्रगुण जितना निर्मल, इतना कार्य तो उस समय भी करता है, चाहे तो विकल्प हो शुभ का या अशुभ का हो, परन्तु जो निर्मल पर्याय प्रगट श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का अंश हुआ, वह कहीं कूटस्थ पड़ा है या कोई परिणमन / कार्य करता है? समझ में आया? अब थोड़ा सूक्ष्म आया। समझ में आया या नहीं कुछ?

आत्मा, भगवान सागर सरोवर, सागर बड़ा समुद्र स्वयंभूरमण समुद्र है आनन्द का-स्वयंभूरमण समुद्र। दृष्टि की उस पर जहाँ थाप पड़ी, उस पर्याय में श्रद्धा में सारा आनन्दस्वरूप ऐसा आया तो साथ में श्रद्धा हुई, ज्ञान हुआ, आनन्द की पर्याय हुई, आनन्दगुण की परिणति और चारित्रगुण की परिणति शुद्ध हुई तो विकल्प के काल में वह श्रद्धा-ज्ञान आदि चारित्र की पर्याय निर्मल हुई। वह कुछ कार्य करती है या नहीं? या राग ही अकेला काम करता है? आहाहा! समझ में आया? समझ में आये ऐसी बात है, हों! न समझ में आये ऐसी बात नहीं है। ऐसा नहीं समझना कि नहीं... नहीं... हमारे से नहीं समझ में आयेगी।

मुमुक्षु : स्पष्टीकरण स्पष्ट आता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : स्पष्ट ही है, वस्तु ही ऐसी है।

देखो! यहाँ क्या कहा? कि तीन भाव है, प्रगट हुआ सम्यग्दर्शन-ज्ञान धर्म-पर्याय प्रगट हुई तो श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र-आनन्दादि का कार्य होता है या नहीं (होता है) हैं? (होता है) तो उसक कार्य में रागरहित है। विकल्प आने पर भी वह वस्तु तो रागरहित कार्य करती है। भाई! क्या कहा? फिर से, देखो! जो द्रव्यवस्तु ध्रुव को ध्येय बनाकर जो श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र की पर्याय, आनन्द की पर्यायरूप कार्य हुआ तो वह कार्य समय-समय होता है या नहीं? (होता है) विकल्प के काल में विकल्परहित वह कार्य होता है। आहाहा! इसलिये यह अन्दर ले लिया है। समझ में आया? हो राग, राग राग के घर में रहा, आत्मा में राग कहाँ घुस गया है? (कोई ऐसा कहे-निर्विकल्प का अर्थ पारिणामिकभाव) यहाँ तो निर्विकल्प इसी बात के लिये तो यह लिया है।

ए भगवान! सुन तो सही प्रभु! यहाँ तो समस्त रागादिरहित का अर्थ यह है कि

निर्मल पर्याय में राग का अंश नहीं तो उस समय जो श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र आनन्द स्वच्छता कर्ता-कर्म आदि निर्मल पर्याय जो कार्यरूप परिणति है, उस विकल्प के काल में परिणमता है या नहीं ? या विकल्प के काल में नहीं परिणमता ? और यहाँ तो कहते हैं विकल्प से रहित ऐसी दशा श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र की जो अनन्त गुण की हुई, वह राग से रहित अपना कार्य करती है। समझ में आया ? यह तो प्रगट पर्याय की बात चलती है न ? ध्रुव तो ध्रुव है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-धर्मपर्याय प्रगट हुई, वह समय-समय कोई कार्य किये बिना रहती है ? एक समय की भावना है, यह तो कह दिया। दूसरे समय में ऐसी क्रिया, तीसरे समय में ऐसी क्रिया... क्रिया अर्थात् परिणमन, ऐसा परिणमन तो निरन्तर चालू है। आहाहा ! समझ में आया ? थोड़ा बहुत न समझ में आये तो रात्रि को पूछना। रात्रि को समय रखा है या नहीं ?

मुमुक्षु : अभी फिर से बता दो।

पूज्य गुरुदेवश्री : हमारे धन्नालालजी निकालते हैं, सब (प्रश्न) रात्रि को। यह प्रश्न बिल्कुल स्वयं प्रश्न निकालते थे। समझ में आया ? क्या कहा ? तीन बात।

एक तो ध्रुव त्रिकाली है, उसमें पर्याय कथंचित् अभिन्न और कथंचित् भिन्न। एक समय की पर्याय बदल जाती है, इसलिए भिन्न है - ऐसा कहा। दूसरी बात, पर्याय जो प्रगट हुई धर्म की, तीन भावरूप, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र वीतरागपर्यायरूप, वह राग से रहित है। वह सम्यग्दृष्टि ध्रुव का ध्येय करनेवाला, उसका राग विषय रहा नहीं तो राग विषय रहा नहीं तो राग का ज्ञान अपने में से अपने कारण से ज्ञान अपने से होता है। समझ में आया ? उस ज्ञान की, श्रद्धा, आनन्द की पर्याय कार्य करती है। समय-समय में ज्ञानगुण की पर्याय जानना हुई, वह कार्य करती है या नहीं ? तो यहाँ कहते हैं कि रागरहित कार्य करती है वह। ऐ नवरंगभाई ! आहाहा ! ऐसा कार्य करती है 'समस्त रागादि से रहित है' सुनो तो सही ! सम्यग्दर्शन-ज्ञान और स्वरूपाचरण जहाँ प्रगट हुआ, वह तो बिल्कुल राग से रहित ही अपने स्वभावसन्मुख की परिणति है, वह परपरिणति से तो रहित ही है। चौथे (गुणस्थान) से ऐसा है, सम्यग्दृष्टि को ऐसा है। आहाहा !

चारित्र के दोष की अपेक्षा से कहो तो उसकी पर्याय में राग है - ऐसा कहने में आता है, परन्तु जहाँ दृष्टि के विषय में तो उसकी पर्याय में राग ही नहीं - ऐसा कहने में आता

है क्योंकि दृष्टि का विषय भगवान परमशुद्ध परमात्मा है। समझ में आया?

मुमुक्षु : श्रद्धा में राग-द्वेष निकल गया।

पूज्य गुरुदेवश्री : श्रद्धा-ज्ञान में, परिणति में से राग-द्वेष निकल गया, दृष्टि की अपेक्षा से वह तो। क्योंकि सम्यग्दृष्टि की परिणति द्रव्य का पारिणामिक त्रिकाली भाव के आश्रय से हुई है न? वह तो शुद्ध का परिणमन हुआ। वस्तु शुद्ध है, पवित्र है - ऐसा शुद्ध परिणमन हुआ तो शुद्ध परिणमन, अशुद्ध परिणमन से रहित है - ऐसा कहते हैं। आहाहा!

मुमुक्षु : उसी काल में रहा?

पूज्य गुरुदेवश्री : उसी काल में। समझ में आया? आहा! उसी काल में रागरहित हुआ ऐसा पण्डितजी कहते हैं। पण्डितजी पुष्टि करते हैं। उसी समय निर्मल पर्याय कार्य करती है, उस समय रागरहित है, ऐसा। दूसरे समय में नहीं उसी समय रागरहित है। समझ में आया? चारभाव कहा न पर्यायरूप, वे तीन भाव जो मोक्षमार्ग की पर्याय हुई, वह उदयभाव की पर्यायरहित है - ऐसा कहना है। आहाहा! समझ में आया?

कारण... शुद्ध-उपादानकारणभूत होने से मोक्षकारण (मोक्ष के कारण) हैं... भाई! यहाँ वापस 'भूत' आया। (पर्याय आयी)। है पर्याय, परन्तु यहाँ वापस कारणभूत लिया, उस पहले में अन्तर था, पहले आया था न? पहले 'शुद्धउपादानभूत' कहा था। पहले पहला साधारण आया था। पहले शुद्धउपादानरूप आया था। पैराग्राफ की पाँचवीं लाईन—'शुद्धउपादानरूप' वह पर्याय थी। समझ में आया? और पश्चात् 'शुद्धउपादानभूत' आया न? यह दूसरे पैराग्राफ की पहली लाईन 'सर्वविशुद्धपारिणामिक-परमभावलक्षण शुद्धउपादानभूत' यह द्रव्य है। पहले उपादान जो पाँचवीं लाईन में आया था, वह पर्याय है और यह सर्वविशुद्ध का जो है, वह द्रव्य है और यहाँ जो शुद्धउपादानभूत कहा, तथापि वह पर्याय है। समझ में आया? **शुद्ध-उपादानकारणभूत...** ऐसा लिया न? 'शुद्धउपादानभूत' ऐसा नहीं लिया है, ऐसी अस्ति सिद्ध करना है। समझ में आया? **मोक्षकारण हैं...** कौन? पर्याय मोक्ष का कारण है। **परन्तु शुद्धपारिणामिक नहीं...** शुद्धपारिणामिकभाव मोक्ष का कारण नहीं है। विशेष आयेगा समय हो गया।

(**श्रोता :** प्रमाण वचन गुरुदेव!)